B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Town planning of Indus valley civilization

Prepared by : Sri Pinku kumar
Asst. Professor (Dept. of History)
B.N. College Bhagalpur
Contact (whatsApp) no- 7982166260
Email id- kpinku348@gmail.com

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

परिचय

- सिन्धु घाटी सभ्यता अपनी विशिष्ट एवं उन्नत नगर योजना (town planning) के लिए विश्व प्रसिद्ध है क्योंकि इतनी उच्चकोटि का 'वस्ति विन्यास' समकालीन अन्य सभ्यताओं में दिखाई नहीं पड़ता है।
- सैन्धव लोग सभ्य, उच्च कोटि के अभियन्ता एवं वास्तुशिल्पज्ञ थे। प्रमुख नगरों का निर्माण उन्होंने नियोजित योजना के आधार पर किया था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने अपने नगरों के निर्माण में शतरंज पद्धति (चेशबोर्ड) को अपनाया जिसमें सड़कें सीधी एवं नगर सामान्य रूप से चौकोर होते थे। सड़कें बिछाने की समस्या मकानों के निर्माण से पहले ही हल कर दी जाती थी।

परिचय-1

- मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण जाता था एवं दूसरा मार्ग पूरब से पश्चिम उसे समकोण पर काटता था। मोहनजोदड़ो में राजपथ की चौड़ाई दस मीटर थी।
- यहां के महत्त्वपूर्ण स्थलों का विभाजन होता था।पश्चिमी भाग में दुर्ग (गढ़ी) होता था जबकि पूर्वी भाग में निम्न शहर होता था।
- इस सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता सड़कों का जाल बिछा होना था। मुख्य मार्ग एक दूसरे को समकोण पर काटता था।
- सड़के कच्ची होती थीं। एक सड़क को पक्की बनाने की कोंशिश केवल मोहनजोदड़ों में की गई थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता के नगर योजना एवं वास्तुकला के अध्ययन इस सभ्यता के निम्न नगरों का उल्लेख प्रासंगिक प्रतीत होता है –

मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चान्हूदड़ो, कालीबंगा तथा लोथल ।

परिचय-2

- हड़प्पा के उत्खननों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह नगर तीन मील के घेरे में बसा हुआ था। उत्खनन से जो भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं उनमें स्थापत्य की दृष्टि से दुर्ग एवं रक्षा प्राचीर के अतिरिक्त निवासों – गृहों, चबूतरों तथा 'अन्नागार' का विशेष महत्त्व है।
- हालांकि सिंधु घाटी सभ्यता का हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, सुत्कागेन-डोर एवं सुरकोटदा आदि की 'नगर निर्माण योजना' (town planning) में मुख्य रूप से समानता मिलती है।
- कालीबंगा ही एक ऐसा स्थल है जहाँ का का 'नगर क्षेत्र' भी रक्षा प्राचीर से घिरा है। परन्तु लोथल तथा सुरकोटदा के दुर्ग तथा नगर क्षेत्र दोनों एक ही रक्षा प्राचीर से घिरा था।
- साक्ष्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्ग के अंदर महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक तथा धार्मिक भवन एवं अन्नागार स्थित थे।

दुर्ग (CITADEL)

सिंधु घाटी सभ्यता के 'नगर योजना' को निम्न शीर्षकों के अंतर्गत अध्ययन कर सकते हैं- दुर्ग,भवन निर्माण व तकनीक, कुएं, नालियां, वृहद्-स्नानागार, सभा-भवन, अन्नागार, सड़कें आदि।

हड़प्पा का दुर्ग

- हड़प्पा नगर की रक्षा हेतु पश्चिम में एक दुर्ग का निर्माण किया गया था जो आकार में 'समकोण चतुर्भुज' के समान था।
- उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लम्बाई 460 गज तथा पूर्व से पश्चिम की ओर चौड़ाई 215 गज अनुमानित है।
- इसकी ऊँचाई लगभग 40 फुट है। जिस टीले पर इस दुर्ग के अवशेष प्राप्त होते हैं उसे विद्वानों ने 'ए बी' टीला कहा है।

मोहनजोदड़ो का दुर्ग

- हड़प्पा की तरह यहां का दुर्ग भी एक टीले पर बना हुआ था जो दक्षिण की ओर 20 फुट तथा उत्तर की ओर 40 फुट ऊँचा था।
- साक्ष्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि सिन्धु नदी की बाढ़ के पानी ने इसके बीच के कुछ भागों को काटकर इसे दो भागों में विभक्त कर दिया है।
- इस संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि प्राचीन काल में नदी की एक धारा दुर्ग के पूर्वी किनारे पर अवश्य रही होगी।
- साथ ही इस दुर्ग के नीचे पक्की ईंटों की पक्की नाली का निर्माण किया गया था जिससे वे बाढ़ के पानी को बाहर निकाल सकें।

लोथल का रक्षा प्राचीर

- लोथल का रक्षा प्राचीर या टीला लगभग 1900 फुट लम्बा, 1000 फुट चौड़ा तथा 200 फुट ऊँचा हैं। यहाँ छः विभिन्न कालों की सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- उत्खनन से ऐसा प्रतीत होता है कि लोथल के निवासियों ने बाढ़ से सुरक्षा के लिए पहले कच्ची ईंटों का एक विशाल चबूतरा निर्मित किया।
- तत्पश्चात उसे पुनः और अधिक ऊँचा करके इस चबूतरे पर एक मिट्टी के बने 'सुरक्षा प्राचीर' का निर्माण किया गया जो 35 फुट चौड़ा तथा 8 फुट ऊँचा है।
- 1957 के उत्खनन में प्राचीन बस्ती के बाहर चारों ओर एक 'चबूतरे के अवशेष' मिले।
- यह चबूतरा कच्ची ईंटों का बना था। उस समय इसे दक्षिण की ओर 600 फुट तक तथा पूर्व की ओर 350 फुट तक देखा जा सकता था।

भवन निर्माण और तकनीकें

- सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन (town planning) का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष 'भवन निर्माण कला' था। इन नगरों के स्थापत्य में 'पक्की सुन्दर ईंटों' का प्रयोग उनके विकास के लम्बे इतिहास का प्रमाण है।
- यहां पर ईंटों की चुनाई की ऐसी विधि विकसित कर ली गई थी जो किसी भी मानदंड के अनुसार वैज्ञानिक थी और 'आधुनिक इंग्लिश बांड' से मिलती-जुलती थी।
- मकानों की दीवारों के निर्माण के समय ईंटों को पहले लम्बाई के आधार पर पुनः चौड़ाई के आधार पर जोड़ा गया है। चुनाई की इस पद्धति को 'इंग्लिश बांड' कहते हैं।
- हड़प्पा में मोहनजोदड़ो की तरह विशाल भवनों के अवशेष प्राप्त नहीं हुए तथा दुर्ग के ऊपर जो अवशेष मिले हैं,

  उनसे प्राचीन स्थापत्य (architecture) पर कोई उल्लेखनीय प्रकाश नहीं पड़ता।

साधारण आवासीय मकान

- सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों के सामान्य लोगों के मकान के बीच एक आँगन होता था, जिसके तीन अथवा चारों तरफ चार-पाँच कमरे, एक रसोईघर तथा स्नानागार रहता था। मकान तथा अन्य भवन मुख्यतः आयाताकार होते थे।
- हालांकि अधिकांश घरों में एक कुआँ भी होता था। "जल निकास" की सुविधा की दृष्टि से स्नानागार प्रायः गली की ओर स्थित होते थे। स्नानाघर के फर्श में अच्छे प्रकार की पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था।
- संपन्न लोगों के घरों में शौचालय भी बने होते थे। उत्खनन में मोहनजोदड़ो से जो भवनों के अवशेष मिले हैं उनके 'द्वार' मुख्य सड़कों की ओर न होकर 'गलियों की ओर' खुलते थे। 'खिड़कियाँ' कहीं-कहीं मिलते हैं।

साधारण आवासीय मकान-1

- सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना के अंतर्गत दो मंजिले भवनों का भी निर्माण किया गया होगा क्योंकि ऊपरी भवन खंड में जाने के लिए 'सीढ़ियाँ' बनी थीं जिनके अवशेष अभी तक विद्यमान हैं।
- यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि लोथल, रंगपुर एवं कालीबंगा में भवनों के निर्माण में कच्ची ईंटों का भी प्रयोग किया गया है। कालीबंगा में पक्की ईंटों का प्रयोग केवल नालियों, कुओं तथा दलहीज के लिए किया गया था।
- लोथल के लगभग सभी भवनों में पक्की ईंटों के फर्श वाले एक या दो चबूतरे मिले हैं जो प्रायः स्नान के लिए प्रयोग होते थे।
- भवन निर्माण हेतु मोहनजोदड़ों तथा हड़प्पा में पकी हुई ईंटों का प्रयोग किया गया था।

कुएँ

- साधारण अथवा असाधारण सभी भवनों के अन्दर कुएँ होते थे जिनका आकार में प्रधानतया **'अंडाकार'** होता था।

नालियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता की नगर योजना की मुख्य विशेषता 'नालियों की व्यवस्था' से स्पष्ट होता है। इसका निर्माण पक्की ईंटों से होता था।
- **लोथल** में ऐसी अनेक नालियों के अवशेष मिले हैं जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं. इन नालियों को ढकने की भी व्यवस्था की गई थी।
- सड़कों के किनारे की नालियों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर mail holes का समुचित प्रावधान रहता था।

वृहद्-स्नानागार

- हड़प्पा सभ्यता के स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण 'वृहद् स्नानागार या विशाल स्नानागार' है. यह मोहनजोदड़ो पुरास्थल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवशेष है।
- इसका आकार लगभग 12x7x2.5 मीटर (लं.xचौ. xगहराई) था। नीचे उतरने के लिए इसमें सीढ़ियाँ थीं। स्नानागार में प्रवेश के लिए 'छः प्रवेश-द्वार' थे।

सभा भवन

- मोहनजोदड़ो में स्तूप टीले से कुछ दूर दक्षिण में एल एरिया में एक विशाल भवन था। मैके की धारणा है कि यह शहर के आर्थिक जीवन से सम्बद्ध था।
- यह ईंटों से निर्मित पाँच-पाँच स्तम्भों की चार पंक्तियों अर्थात् चौकोर 20 स्तम्भों से युक्त हॉल है। संभवतः यहां 'सार्वजनिक सभाएँ' आयोजित होती होंगी।

अन्नागार

- वास्तुकला की दृष्टि से मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में बने अन्नागार (धान्यगार) भी उल्लेखनीय है। पहले इसे स्नानागार का ही एक भाग माना जाता था। किन्तु 1950 ई. के उत्खननों के बाद यह ज्ञात हुआ है कि वे अवशेष एक 'विशाल अन्नागार' के हैं।
- मोहनजोदड़ो का अन्नागार पक्की ईंटों के विशाल चबूतरे पर निर्मित है।
- इस विशाल अन्नागार का निर्माण खण्डों में किया गया था। ऐसे बारह खण्ड हैं जो छः-छः की दो पंक्तियों में विभक्त हैं।
- उक्त भण्डारों के तल तक पहुँचने हेतु एक ढाल युक्त मार्ग बनाया हुआ था। ऐसा भण्डारों में रखी जाने वाली सामग्री के निकालने एवं पहुँचाने में सुगमता की दृष्टि से किया जाता होगा।
- हड़प्पा में भी एक विशाल धान्यागार (granary) अथवा "अन्न-भंडार" के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

सड़कें

- सिन्धु घाटी सभ्यता की नगरीय-योजना (two planning) में वास्तुकला की दृष्टि से मार्गों (सड़कों) का महत्त्वपूर्ण स्थान था। इन मार्गों (सड़कों) का निर्माण एक सुनियोजित योजना के अनुरूप किया जाता था।
- साक्ष्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य-मार्गों का जाल प्रत्येक नगर को प्रायः पाँच-छः खंडों में विभाजित करता था।
- मोहनजोदड़ो निवासी नगर-निर्माण प्रणाली से पूर्णतया परिचित थे, इसलिए वहाँ के स्थापत्यविदों ने नगर की रूपरेखा (layout) में मार्गों का विशेष प्रावधान किया।
- नगर की सड़कें सम्पूर्ण क्षेत्र में एक-दूसरे को 'समकोण' पर काटती हुई 'उत्तर से दक्षिण' तथा 'पूरब से पश्चिम' की ओर जाती थीं।